IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

भारत में शिक्षित युवा एवं सामाजिक परिवर्तन समाज शास्त्रीय अध्ययन (सीधी जिले के विशेष सन्दर्भ में)

Dr. Madhulika Shrivastava
Professor, Department of Sociology
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, (M.P), India

सारांशः शिक्षा सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण और पारम्परिक दृष्टिकोण को बदल देती है यह बच्चों के कौशल और ज्ञान को तेज करती है तकनीकी शिक्षा औद्यौगीकरण की प्रक्रिया में मदद करती है जिसके परिणाम स्वरूप समाज में व्यापक परिवर्तन होते है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली साधन है जैसे शिक्षा सामाजिक सुधार या सामाजिक परिर्वतन का कारण बनती है और दूसरी और, सामाजिक परिवर्तन शैक्षिक परिवर्तन का कारण बनते है। भारतवर्ष में लगभग 37 करोड़ जनसंख्या युवाओं की है। युवा देश का भविष्य है आगामी विकसति भारत की संकल्पता युवा समाज की कर्मठता से ही सभंव है।

मुख्यशब्दः– शिक्षा, युवा, विकास, सामाजिक परिवर्तन सामाजिक व्यवस्था।

प्रस्तावनाः– भारत जैसे विकसति देश में सामाजिक विकास के एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में शिक्षा को देखा जा सकता है। भारतीय संविधान का एक प्रमुख उद्देश्य स्वाधीन राजनीतिक व्यवस्था के तहत सामजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैशिक क्षमता के देश के प्रत्येक नागरिक को प्रदान करना है। सार्थक सामाजिक परिवर्तन हेतु देश के युवाओं को उच्च कौशन युक्त शिक्षा दिया जाना अति आवश्यक है ताकि सामाजिक विकास की संकल्पना को सरकार किया जा सके। यंहा पर सामाजिक विकास को सामाजिक परिवर्तन के विशिष्ट प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। जिसमें प्रयास किया जाता है कि देश के प्रत्येक नागरिकको उत्कृष्ट भौतिक व्यवस्थाएं एवं रहन–सहन, खान–पान स्वास्थ्य स्तर व लंबी आयु हेतु अधिक शिक्षित किया जाए ताकि निरंतर वे अपना विकास कर सकें। क्योंकि अशिक्षा के फलस्वरूप जागरूकता का अभाव समाज में व्युत्पन्न होता है जिससे समाज में आर्थिक विकास एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं को ग्रहण करने एवं नवीन उपागम का समर्थन करने में युवा वर्ग में चेतना शून्यता देखने को मिलती है।

शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तनः–

किसी भी देश में होने वाले सामाजिक परिवर्तन हेतु शिक्षित युवा वर्ग सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हुए आमूल मूल परिवर्तन ला सकता है। अतः सामाजिक परिवर्तन क्या है यह समझना आवश्यक हो जाता है। इस हेतु हम यंहा पर पारसंस के सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत की चर्चा करेगें। पारसंस ने सामाजिक व्यवस्था के अस्तित्व हेतु एक विश्चित मात्रा में सतुंलन एवं एकीकरण को आवश्यक माना है उन्होने सामाजिक परिवर्तन की व्याख्या दो स्तरो पर क ी है पहला समाजिक व्यवस्था में परिवर्तन एवं दूसरा सामाजिक व्यवस्था का परिवर्तन। पारसंस के अनुसार प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था की कुछ आवश्यकताएं होती है जिनकी पूर्ति व्यवस्था के अस्तित्व हेतु आवश्यक है जैसेः

1. व्यवस्था का अपने बाहा पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए सदस्यों के न्यूनतम भौतिक आवश्यकताओंको पूरा करना अर्थात अनुकूलन करना।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

2. समाज के लक्षण का निर्धारण और विद्यमान साधनों के साथ समन्वय स्थापति करना अर्थात लक्षण की प्राप्ति करना।

3. समाज के अगों के मध्य संघर्षो का निपटारा करते हुए एकीकरण स्थापित करना।

4. समाज क नियमों एवं प्रतिमानों का तनाव रहित अनुरक्षण करना।

क्योंकि सामाजिक व्यवस्था आत्मपेाषी एवं आत्म अनुरक्षित होती है। अतः वह इन आवश्यकताओं की पूर्ति विभिन्न संस्थाओं जैसे आर्थिक संस्था, राजनीतिक संस्था, कानूनी संस्था, शैक्षिक संस्था, धार्मिक संस्था एवं परिवार आदि का सहारा लेती है। यह सभी संस्थाएं अपने–अपने प्रकार्यो के द्वारा सामाजिक व्यवस्था की आवश्कताओं को पूर्ण करती है एवं सामाज में एकीकरण व संतुलन को बनाए रखती है। पारसंस को बनाए रखती है। पारसंस का मानना है कि यह संतुलन पुरूषो ने रोजगार प्राप्त करके परिवार एवं समाज में अपनी स्थिति को उंचा भी उठाया है। आधुनिक शिक्षा के द्वारा युवा समाज में चाहे वह स्त्रिया हो या पुरूष समानता, स्वंतत्रता एवं वैज्ञानिक दृष्टकोण का जन्म हुआ है। जिसके फल स्वरूप उन्होने विषमता, सामाजिक वंचना और अन्य सभी प्रकार के भेदभाव के विरूद्ध आवाज उठाना शुरू कर दिया है।

शिक्षा के द्वारा युवा समाज के द्वारा प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था यथा जाति व्यवस्था या सामाजिक स्तरीकरण की बंद व्यवस्था को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान समय में शिक्षा में समाहित लोकतांत्रिक मूल्य ने परपरांगत भारतीय सामाजिक व्यवस्था को लोकतंत्र की ओर अग्रेसित किया है। आधुनिक शिक्षा ने विभिन्न व्यवस्थाओं के लिये सार्थक कौशल तथा प्रशिक्षण प्रदान करके युवाओं को विभिन्न प्रशासनिक पदों के लिये तैयार किया है जिसके फल स्वरूप आर्थिक विकास की प्रक्रिया में तीव्रता देखी जा सकती है शिक्षा के क्षरा सामाजिक परिवर्तन या आधुनिकीकरण के उद्देश्यों की पूर्ति वर्तमान समाज मे देखी जा सकती है। आवश्यक है कि शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त विषमता को दूर करते हुये शिक्षा प्राप्ति के समान अक्सर सभी वर्ग के युवाओं यथा स्त्रियों एवं पुरूषो को उबलब्ध कराया जाए। भारत जैसे विकासशील देश में सामाजिक विकास के एक महत्वपूर्ण आयाम के रूप में शिक्षा को देखा जा सकता है। भारतीय संविधान का एक प्रमुख उद्देश्य स्वाधीन राजनीतिक व्यवस्था के तहत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक क्षमता देश के प्रत्येक नागरिक को प्रदान करना है। सार्थक सामाजिक परिवर्तन हेतु देश के युवाओं को उच्च कौशल युक्त शिक्षा दिया जाना अति आवश्यक है ताकि सामाजिक विकास की संकल्पना को सरकार किया जा सके। यहां पर सामाजिक विकास को सामाजिक परिवर्तन के विशिष्ट प्रक्रिया के रूप में देखा जा सकता है। जिसमें प्रयास किया जाता है कि देश के प्रत्येक नागरिक को उत्कृष्ट भौतिक व्यवस्थाएं एंव रहन–सहन खान–पान, स्वास्थ्य स्तर व लंबी आयु हेतु अधिक शिक्षित किया जाए ताकि निरंतर वे अपना विकास कर सकें। क्योकि अशिक्षा के फलस्वरूप जागरूकता का अभाव समाज में व्युत्पन्न होता है। जिससे समाज में आर्थिक विकास एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं को ग्रहण करने एवं नवीन उपागम का समर्थन करने में युवा वर्ग में चेतना शून्यता देखने को मिलती है। युवा जितना सशक्त होगा, जितना शिक्षित होगा देश भी विकाश मार्ग में उतना ही आग्र बढेगा। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में होने वाले सामाजिक परिवर्तन देशहित एवं समाजहित श्रेयकर साबित होगें।

अतः जब युवासमाज पूर्णतया शिक्षित होगा तभी देश में बांछित सामाजिक परिवर्तन सम्भव हो सकेगें।

शोध के उद्देश्यः–

- युवा शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है कि युवाओं के जीवन में वर्तमान के साथ–साथ भविष्य को भी आकार देती है।
- सामाजिक प्रगति निरन्तर विकसित हो रही है।
- युवा शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन से युवाओ की परिवर्तन शक्ति विकसित हो रही है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

- युवा अपने नये दृष्टिकोण नवीन दिमाग असीम उर्जा और बेहतर दुनिया के लिये सहज इच्छाओं का विकास कर रहे है।
- युवा नेतृत्व मे सार्थक प्रभाव हो रहा है।
- युवा वर्ग में निहित उत्साव और सकारात्मक का विकास हो रहा है।

शोध प्रविधिः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध में रखते हुये निम्न पद्धतियों का उपयोग किया गया है।

निर्देशन पद्धतिः–

अध्ययन को स्वरूप देने के लिये उद्देश्य पर निर्देशन क अन्तर्गत सीधी शहर में रह रहे युवाओं का चयन निर्देशन के माध्यम से किया है।

शोध उपकरणः–

प्रश्नावलीः–अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिये सीधी शहर के क्षेत्रों में निवास कर रहे युवाओं से प्रश्नावली के माध्यम से उनकी राय और विचारो को जानने का प्रयास किया गया है।

अनुसूचीः–कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने समस्या होने के कारण उनसे राय और विचार जानने के लिये प्रश्नावली का उपयोग यंहा अनुसूची के रूप मे भी किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आकंडो का प्रस्तुतीकरणः–प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि सीधी जिले के क्षेत्र में रहने वाले युवाओं की स्थिति और कार्यपद्धति को केन्द्र में रखकर यह शोध कार्य किया गया है। तथ्यो और आकड़ो को प्रश्नावली अनुसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध में सीधी जिले के क्षेत्र में रह रहे ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में रहे रहे युवाओं पर विशेष रूप से केन्द्रित है। अध्ययन में युवाओ को शामिल किया गया है जिसमें विषय सें सम्बधित जानकारी प्राप्त की गयी है। तथ्य संकलन हेतु 50 प्रश्न भरवाया गया है। तथ्य विश्लेषण 50 प्रतिभागियों के मतो को शामिल किया गया है।

साक्षात्कार अनुसूची में कुल 3 प्रश्नो को शामिल किया गया हैं। साक्षात्कार अनुसूची में बहुविकल्पीय प्रश्नो के माध्यम से प्राप्त तथ्यो को अध्ययन हेतु केन्द्र में रखा गया है। साक्षात्कार अनुसूची में विकल्प के रूप में हां नही और पता नही हो तथ्य संकलन हेतु आधार बनाया गया है जो इस प्रकार हैः–

तालिका कमांक–1

क्या युवा शिक्षा और परिवर्तन से युवाओं के जीवन में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

कमांक	सीधी जिले क्षेत्र के युवा वर्ग	न्यादर्शो की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1	हां	50	33	66
2.	नही	50	10	20
3.	पता नही	50	07	14
	योग	50	50	100

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

उक्त तालिका कमांक 1 से ज्ञात होता है कि सीधी जिले के युवावर्ग के लोगो ने कहा कि युवा शिक्षा और परिवर्तन से युवाओं के जीवन में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 33 (66 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि हां युवाशिक्षा और परिवर्तन से युवाओ के जीवन में सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है तथा 10 (20 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि युवा शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन से युवाओ के जीवन में सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है, जबकि 07 (14 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि पता नही है।

तालिका कमांक 2

क्या युवा शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन से युवाओ की परिवर्तन शक्ति विकसित हो रही है।

कमांक	सीधी जिले क्षेत्र के युवा वर्ग	न्यादर्शो की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	50	25	50
2.	नही	50	20	40
3.	पता नही	50	05	10
	योग	50	50	100

उक्त तालिका कमांक 2 से ज्ञात होता है कि सीधी जिले के क्षेत्र के युवा वर्ग में क्या युवा शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन से युवाओ की परिवर्तन शक्ति विकसित हो रही है, में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 25 (50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि हां युवा शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन से युवाओ की परिवर्तन शक्ति में परिवर्तन हो रहा है। 20 (40 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि युवा शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन से युवाओं की परिवर्तन शक्ति विकसित नही हो रही है। जबकि 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदातओं ने कहा कि ज्ञात नही है।

तालिका कमांक 3

क्या युवा शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन से युवा अपने नये दृष्टिकोण तथा बेहतर दुनिया के लिये सहज विकास कर रहे है।

कमांक	सीधी जिले क्षेत्र के युवा वर्ग	न्यादर्शो की संख्या	संख्या	प्रतिशत
1.	हां	50	27	54
2.	नही	50	15	30
3.	पता नही	50	08	18
	योग	50	50	100

उक्त तालिका कमांक 3 से ज्ञात होता है कि सीधी जिले क्षेत्र के युवा वर्ग क्या युवा शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन से अपने नये दृष्टकोण तथा बेहतर दुनिया के लिये सहज विकास कर रहे है, में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 27 (54 प्रतिशत) ने कहा कि हां युवा शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन से युवा अपने नये दृष्टिकोण तथा बेहतर दुनिया के लिये सहज विकास कर रहे है तथा 15 (30 प्रतिशत) उत्तरदातओं ने कहा कि युवा शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन से अपने नये दृष्टकोण तथा बेहतर दुनिया के लिये सहज विकास नही कर रहे है, जबकि 08 (28 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि पता नही है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

निष्कर्ष:

युवा समाज को सार्थक पथ प्रदर्शन के द्वारा उनकी उर्जा एवं बौद्धिक क्षमता का अधिक से अधिक उपयोग करते हुये उन्हे समाज के हितार्थ कार्य करने की प्रेरणा देते हुये विकास मार्ग से जोडा जा सकता हैं। ताकि देश के कल्याण के लिये सार्थक सामाजिक परिवर्तन सम्भव हो सकें, साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कुछ और सुधार करते हुये युवावर्ग को उचित लाभ देते हुये उन्हें उच्च कौशल शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया जाये, ताकि शिक्षा के दौरान अपेक्षित परिवर्तनो को प्राप्त किया जा सकें तथा इसके आवांछनीय प्रभाव को कम करते हुये देश के युवाओ को आर्थिक रूप से समृद्धि बनते हुये देश को विकास मार्ग पर और भी आगे ले जाया जा सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

[1]. गुप्ता प्रवीण कुमार समाजशास्त्र पुणेकर पब्लिकेशंस इन्दौर।

[2]. पाण्डेय एस. एस. समाजशास्त्र, टाटा मैकग्रा हिल एजुकशन प्रा. लि. न्यू दिल्ली 2009

[3]. सचदेव डी. आर., भारत में समाज कल्याण प्रशासन, किताब महल एजेंसीज पटना 2008

[4]. नेमा जी.पी. शर्मा के.के. मानवाधिकार, कॉलेज बुक डिपो जयपुर।